B.A. Part-I, Paper-I
Lecture - 21
Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor, Maharani college
Darbhanga.

TOPIC समाजीकरण से संबंधित कूले का सिद्धांत

कूले का समाजीकरण का सिद्धांत Social interaction पर आधारित है। कूले का विचार है कि मानव का स्वभाव मूल रूप से उन आदतों से विकसित होता है जिसे एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप सीखता है। जब व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है तो उसे कुछ नया अनुभव होता है जिससे उसमें सामाजिक-संज्ञानात्मक क्षमता विकसित होती है। और वह समाज के व्यवहार को सीखता है जिसके फलस्वरूप इनमें नयी आदतें बन जाती है। कूले ने यह भी स्पष्ट किया कि जब तक कोई

व्यक्ति दूसरे किसी व्यक्ति के सम्पर्क में नहीं आता है, उसे अपनी आदतों विचारों और धारणाओं के बारे में सही ज्ञान नहीं हो पाता है और न ही वह अपने संबंध में कोई निर्णय ही ले पाता है। जब वह दूसरों से सम्पर्क कर अपने बारे में लोगों की धारणाओं से अवगत हो जाता है तो वह अपने बारे में वैसा ही सोचता है और फिर वैसी ही आदतें विकसित कर लेता है। उदाहरण स्वरूप - यदि शिक्षक किसी छात्र की बुद्धि की प्रशंसा हमेशा करते हैं तो वह छात्र अपने बारे में यह सोचने के लिए विवश हो जाता है कि वह वास्तव में अधिक बुद्धि का है। परिणामस्वरूप वह किसी पाठ को ध्यान से सुनकर उसे सबसे पहले सीख लेने की कोशिश करता है। दूसरी ओर यदि शिक्षक किसी छात्र को हमेशा मूर्ख कहते हैं तो धीरे-धीरे यह बात उस छात्र के मन में बैठ जाती है और वह वास्तव में मूर्खों जैसा व्यवहार करने लगता है। इस प्रकार cooley

Scanned by CamScanner

के सिद्धान्त का सार तत्व यह है कि व्यक्ति अपने आप को दूसरों की निगाह (विचार) से देखता है समझता है और फिर उसी के अनुसार अनुक्रियाएं करता है। इस अर्थ में cooley ने दूसरे व्यक्तियों की निगाह या विचार को स्वयं का आईना (looking - glass for self) कहा है जो व्यक्ति में आदत, विचार, भावनाएं आदि विकसित करता है और इस प्रकार व्यक्ति का समाजीकरण करता है।

cooley के अनुसार स्वयं का आईना के विकास में तीन steps महत्वपूर्ण होते हैं जो निम्नलिखित है: —

1. पहले चरण में व्यक्ति इस बात की कल्पना करता है कि उसे दूसरे लोग किस तरह से देखते हैं।

2. दूसरे चरण में व्यक्ति यह बात की कल्पना करता है कि दूसरे लोग उसके appearance को कैसा समझते हैं। क्या है उसका

Scanned by CamScanner

धनात्मक मूल्यांकन करते हैं या वे उसका negative मूल्यांकन करते हैं?

3. तीसरे चरण में उत्पन्न होने वाली self feeling काफी महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यदि वह समझता है कि लोग उसके appearence का धनात्मक मूल्यांकन करते हैं तो इससे उसमें व्यक्तिगत संतोष एवं घमण्ड विकसित होता है और उसी के अनुसार वह कुछ सामाजिक व्यवहार को सीखता है पर यदि वह, वह समझता है कि लोग उसके appearence का ऋणात्मक मूल्यांकन करते हैं तो इससे उसमें असंतोष, कुण्ठा आदि उत्पन्न हो जाता है फलस्वरूप उसके समाजीकरण में कठिनाई उत्पन्न हो जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस सिद्धान्त में समाजीकरण की व्याख्या एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ हुए सम्बन्धों के फलस्वरूप उत्पन्न धारणाओं एवं विचारों के रूप में किया गया है।

Sunita Mishra
9/5/20.